

## प्रारंभिक परीक्षा

### खेत बचाओ अभियान

#### संदर्भ

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय देश भर में 1-30 जून 2026 तक एक महीने तक चलने वाला 'खेत बचाओ अभियान' चलाएगा।

#### प्रमुख विशेषताएं

- **संतुलित उर्वरक उपयोग:** मृदा परीक्षण, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन (INM), और जैविक, जैव-तथा हरी खाद इनपुट के अधिक उपयोग के आधार पर उर्वरक के प्रयोग को प्रोत्साहित करता है।
- **जलवायु-स्मार्ट कृषि परामर्श:** किसानों को फसल चयन, विविधीकरण, जल संकट प्रबंधन और मौसम संबंधी जोखिमों पर व्यावहारिक मार्गदर्शन प्राप्त होता है।
- **व्यापक संस्थागत भागीदारी:** इसे पंचायतों, कृषि विज्ञान केंद्रों (KVKs), ICAR संस्थानों, राज्य सरकारों और कृषि विभागों द्वारा संयुक्त रूप से लागू किया गया है।
- **पंचायत-केंद्रित दृष्टिकोण:** स्थानीय संस्थानों और सामुदायिक नेताओं की सक्रिय भागीदारी के साथ ग्राम-स्तरीय कार्यान्वयन पर केंद्रित है।
- **योजनाओं का अभिसरण:** पीएम-किसान (PM-KISAN), किसान क्रेडिट कार्ड, दलहन-तिलहन मिशन, ऑयल पाम मिशन, कपास मिशन, मशीनीकरण सहायता और जल संरक्षण पहलों के लाभों को एकीकृत करता है।

### महा (MAHA) जल मिशन

#### संदर्भ

केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह और जल शक्ति मंत्री ने जल क्षेत्र में नवाचार को गति देने के लिए ₹200 करोड़ के महा (MAHA) जल मिशन का शुभारंभ किया।

#### शामिल संगठन:

- **अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (ANRF):** भारत में अनुसंधान वित्तपोषण के लोकतंत्रीकरण और सुव्यवस्थितिकरण के लिए प्राथमिक निकाय।
- **जल शक्ति मंत्रालय:** जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण के लिए नोडल मंत्रालय।
- **अंतरिक्ष विभाग/इसरो (ISRO):** जल मानचित्रण और मूल्यांकन के लिए उपग्रह प्रौद्योगिकियां और भू-स्थानिक डेटा प्रदान करना।

### प्रमुख विशेषताएं

- **वित्तीय सहायता:** पांच वर्षों में ₹200 करोड़ का अनुमानित परिव्यय। चयनित बहु-विषयक संघ (कंसोर्टिया) को ₹20 करोड़ तक का अनुदान मिल सकता है।
- **बहु-विषयक संघ:** विश्वविद्यालयों, राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं, अनुसंधान संगठनों, स्टार्टअप्स, एमएसएमई (MSMEs) और उद्योग भागीदारों के मिश्रण के लिए भागीदारी खुली है।
- **प्रस्तावों के लिए खुली आमंत्रण प्रक्रिया (ओपन कॉल):** इस मिशन में विशेष रूप से उत्पाद और प्रोटोटाइप विकास के लिए स्टार्टअप्स और एमएसएमई हेतु एक समर्पित ओपन कॉल शामिल है।
- **पांच प्राथमिकता वाले विषय:**
  - जल संसाधन मूल्यांकन और सतत प्रबंधन।
  - पेयजल (गुणवत्ता और पहुंच)।
  - जल गुणवत्ता और पारिस्थितिक स्वास्थ्य।
  - जल उपयोग दक्षता और चक्रीय अर्थव्यवस्था।
  - जलवायु लचीलापन और अनुकूलन।
- **डिजिटल एकीकरण:** रियल-टाइम निगरानी और जनभागीदारी के लिए 'जल संचय जन भागीदारी, सिटीजन ट्रेकिंग एंड रिपोर्टिंग' (JSJB-CTR) पोर्टल और ऐप के लॉन्च द्वारा पूरक।

### कोडीन आधारित कफ सिरप का दुरुपयोग

#### संदर्भ

बिहार में कोडीन-आधारित कफ सिरप के दुरुपयोग का बढ़ता मामला, विशेषकर राज्य की शराब बंदी नीति के बाद, सार्वजनिक स्वास्थ्य और कानून-प्रवर्तन की एक चिंता के रूप में उभरा है।

#### कोडीन के बारे में

- **प्रकृति:** कोडीन मॉर्फिन से प्राप्त एक प्राकृतिक ओपिओइड है, जिसे अफीम पोस्ता (ओपियम पॉपी) से प्राप्त किया जाता है।
- **चिकित्सीय उपयोग:** मुख्य रूप से खांसी निवारक के रूप में और हल्के से मध्यम दर्द से राहत के लिए उपयोग किया जाता है।
- **स्वास्थ्य जोखिम:** अत्यधिक उपयोग से श्वसन अवसाद (respiratory depression), निर्भरता, लत और वापसी के लक्षण (withdrawal symptoms) हो सकते हैं।
- **विनियमन:** कोडीन युक्त दवाओं को उनके मादक और व्यसनकारी गुणों के कारण विनियमित किया जाता है।
- **कोडीन का दुरुपयोग क्यों किया जाता है?**
  - **मादक प्रभाव:** बड़ी मात्रा में सेवन करने पर शामक (sedative) और उत्साहवर्धक (euphoric) प्रभाव उत्पन्न करता है।
  - **आसान उपलब्धता:** अक्सर वैध चिकित्सा चैनलों से डायवर्जन और अवैध बिक्री के माध्यम से इसका दुरुपयोग किया जाता है।

- **स्थानापन्न पदार्थ:** कुछ क्षेत्रों में, इसका उपयोग शराब या अन्य मादक पदार्थों के विकल्प के रूप में तेजी से किया जा रहा है।

### संयुक्त राष्ट्र मिशन दक्षिण सूडान (UNMISS)

#### संदर्भ

संयुक्त राष्ट्र मिशन दक्षिण सूडान (UNMISS) में सेवारत भारतीय शांति सैनिक नायब सूबेदार सुजीत कुमार प्रधान को मरणोपरांत डैग हैमरस्कजॉल्ड मेडल (Dag Hammarskjöld Medal) से सम्मानित किया गया।

#### UNMISS के बारे में

- **स्थापना:** दक्षिण सूडान की स्वतंत्रता के बाद 2011 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद द्वारा संकल्प 1996 के माध्यम से निर्मित।
- **मुख्यालय:** जुबा।
- **जनादेश:** नागरिकों की सुरक्षा, शांति कार्यान्वयन के लिए समर्थन, मानवाधिकारों की निगरानी और मानवीय सहायता को सुविधाजनक बनाना।
- **वर्तमान फोकस:** हिंसा को रोकना, विस्थापित आबादी की रक्षा करना और 2018 के पुनर्जीवित शांति समझौते के कार्यान्वयन का समर्थन करना।
- **भारतीय योगदान:** भारत UNMISS में दूसरा सबसे बड़ा सैन्य योगदानकर्ता है, जिसके 4,200 से अधिक कर्मी तैनात हैं।
- **महत्व:** यह संयुक्त राष्ट्र के सबसे बड़े शांति अभियानों में से एक है, जो बार-बार होने वाले गृह युद्ध, विस्थापन और खाद्य असुरक्षा का सामना कर रहे देश में संचालित हो रहा है।

### भुला दिए जाने का अधिकार(RIGHT TO BE FORGOTTEN- RTBF)

#### संदर्भ

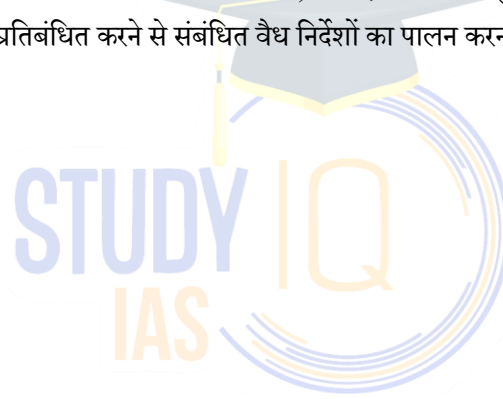
दिल्ली उच्च न्यायालय ने हाल ही में अनुच्छेद 21 के तहत संरक्षित मौलिक अधिकार के अभिन्न अंग के रूप में 'भुला दिए जाने का अधिकार' को मान्यता देकर निजता न्यायशास्त्र के दायरे का विस्तार किया है।

#### मूल सिद्धांत

- 'भुला दिए जाने का अधिकार' (RTBF) व्यक्तियों को कुछ शर्तों के तहत ऑनलाइन सर्च और सार्वजनिक रूप से सुलभ प्लेटफार्मों से अपनी व्यक्तिगत जानकारी, जैसे पिछले आपराधिक आरोप, निजी विवाद, या अन्य संवेदनशील रिकॉर्ड को हटाने या उस तक पहुंच को प्रतिबंधित करने की मांग करने में सक्षम बनाता है।
- यह सिद्धांत सूचनात्मक आत्म-निर्णय (informational self-determination) के विचार से उपजा है, जो व्यक्तिगत डेटा पर एक व्यक्ति के अधिकार को मान्यता देता है।
- यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि पुरानी, अप्रासंगिक, या अनुपातहीन रूप से हानिकारक जानकारी किसी व्यक्ति की गरिमा, प्रतिष्ठा और जीवन में आगे बढ़ने की क्षमता को कमजोर करना जारी न रखे, विशेष रूप से तब जब ऐसी जानकारी में सार्वजनिक हित कम हो गया हो।

### दिल्ली उच्च न्यायालय का दांचा

- **सर्च परिणामों की डी-इंडेक्सिंग:** ऑनलाइन प्लेटफार्मों को निर्दिष्ट मामलों में नाम-आधारित सर्च परिणामों को अक्षम करने का निर्देश दिया जा सकता है। परिणामस्वरूप, यद्यपि न्यायिक रिकॉर्ड सार्वजनिक रूप से उपलब्ध रहते हैं, लेकिन किसी व्यक्ति के नाम का उपयोग करके सर्च के माध्यम से उन्हें आसानी से नहीं खोजा जा सकता है।
- **राहत के लिए पात्र श्रेणियां:** यह सुरक्षा आम तौर पर उपलब्ध है:
  - आपराधिक अपराधों से बरी किए गए व्यक्तियों को।
  - वैवाहिक या निजी नागरिक विवादों में शामिल व्यक्तियों को।
  - ऐसे व्यक्ति जिनके नाम न्यायिक रिकॉर्ड में संयोगवश आते हैं, भले ही वे कार्यवाही के पक्षकार न हों।
- **व्यक्तिगत विवरणों का संपादन (Redaction):** न्यायालय ने नाम, पते और अन्य व्यक्तिगत विवरणों जैसे पहचान संबंधी विवरणों को छिपाने या हटाने पर जोर दिया।
- **मध्यस्थों के कर्तव्य:** न्यायालय ने स्पष्ट किया कि सर्च इंजन स्वचालित अनुक्रमण तंत्र के माध्यम से कार्य करते हैं और वे एल्गोरिदमिक प्रक्रियाओं को किसी व्यक्ति के मौलिक निजता अधिकारों से ऊपर नहीं रख सकते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यवर्ती दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम, 2021 के अनुसार, मध्यस्थों को ऐसी जानकारी को हटाने या उस तक पहुंच को प्रतिबंधित करने से संबंधित वैध निर्देशों का पालन करना आवश्यक है।



## मुख्य परीक्षा

### सस्ती वैश्विक मुद्रा(CHEAP GLOBAL MONEY)

#### संदर्भ

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) की वार्षिक रिपोर्ट 2025-26 ने उच्च संप्रभु बॉन्ड प्रतिफल (sovereign bond yields) और प्रमुख केंद्रीय बैंकों द्वारा मौद्रिक सहजता (monetary easing) की संभावित वापसी से उत्पन्न होने वाले जोखिमों को उजागर किया है।

#### सस्ती मुद्रा के दौर को समझना (Understanding the Era of Cheap Money)

- उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में केंद्रीय बैंकों ने आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए अति-निम्न ब्याज दरों और मात्रात्मक सहजता (Quantitative Easing - QE) को अपनाया।
- मात्रात्मक सहजता (QE) के तहत, केंद्रीय बैंकों ने धन का सृजन किया और सरकारी बॉन्ड तथा दीर्घकालिक परिसंपत्तियों की खरीद की, जिससे वित्तीय प्रणाली में तरलता में वृद्धि हुई।
- इसके परिणामस्वरूप:
  - प्रचुर वैश्विक तरलता उत्पन्न हुई।
  - ऐतिहासिक रूप से निम्न बॉन्ड प्रतिफल (bond yields) देखा गया।
  - उच्च रिटर्न की तलाश में भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं में पूंजी प्रवाह में वृद्धि हुई।

#### यह दौर क्यों समाप्त हो रहा है?

#### मुद्रास्फीति की वापसी

- वैश्विक झटकों की एक श्रृंखला ने मुद्रास्फीति के दबावों को पुनर्जीवित कर दिया है, जैसे कि कोविड-19 आपूर्ति श्रृंखला व्यवधान, यूक्रेन पर रूसी आक्रमण, डोनाल्ड ट्रम्प के तहत व्यापार शुल्क (टैरिफ) उपाय, और इजराइल तथा ईरान से जुड़े जारी तनाव।

#### मात्रात्मक सहजता (Quantitative Easing) का अंत

- लगातार मुद्रास्फीति ने अति-निम्न ब्याज दरों को अस्थिर बना दिया है।
- अत्यधिक सरकारी उधारी और सार्वजनिक ऋण के बढ़ते स्तर ने निरंतर मौद्रिक समायोजन (monetary accommodation) की गुंजाइश को कम कर दिया है।
- परिणामस्वरूप, संप्रभु बॉन्ड प्रतिफल में तेजी से वृद्धि हुई है:
  - अमेरिकी ट्रेजरी प्रतिफल लगभग 4.5% है।
  - यूके (UK) सरकार के बॉन्ड का प्रतिफल 5% से ऊपर है।
  - जापानी सरकार के बॉन्ड का प्रतिफल शून्य-समीप स्तर से बढ़कर लगभग 2.5% हो रहा है।

#### भारत के लिए निहितार्थ

- **विदेशी पूंजी प्रवाह में गिरावट:** उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में उच्च रिटर्न उभरते बाजारों के आकर्षण को कम करते हैं। भारत का शुद्ध पूंजी प्रवाह काफी कमजोर हुआ है, हाल की अवधियों में शुद्ध बहिर्वाह (net outflows) भी देखा गया है।

- **विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (FPI) बहिर्वाह:** एफपीआई (FPI) तेज़ी से सुरक्षित विकसित-बाज़ार परिसंपत्तियों की ओर धन का पुनर्निवेश कर रहे हैं। भारतीय इक्विटी बाज़ारों में विदेशी भागीदारी में कमी और अस्थिरता में वृद्धि देखी जा सकती है।
- **प्रतिफल अंतर (Yield Differential) का संकुचित होना:** भारत का 10-वर्षीय सरकारी बॉन्ड प्रतिफल लगभग 7% है, जबकि अमेरिकी प्रतिफल लगभग 4.5% है। यह अंतर 4 प्रतिशत अंकों से अधिक के ऐतिहासिक औसत की तुलना में घटकर लगभग 2.5 प्रतिशत अंक रह गया है।
- **रुपये पर दबाव:** कम पूंजी प्रवाह विदेशी मुद्रा की उपलब्धता को कम करता है। यह भारतीय रुपये पर मूल्यहास (depreciation) का दबाव डाल सकता है।
- **उच्च बाह्य उधारी लागत:** अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों से धन जुटाते समय भारतीय कॉर्पोरेट्स और सरकार को बढ़ी हुई लागतों का सामना करना पड़ सकता है।

### भारत के लिए चुनौतियाँ

#### समष्टि-आर्थिक (Macroeconomic) चुनौतियाँ

- **मुद्रा स्थिरता का प्रबंधन:** विदेशी प्रवाह में कमी से विनिमय-दर में अस्थिरता बढ़ सकती है।
- **महंगी पूंजी के बीच विकास को बनाए रखना:** उच्च वैश्विक ब्याज दरें निवेश और आर्थिक गतिविधियों को हतोत्साहित कर सकती हैं।
- उच्च विकास दरों को बनाए रखना अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
- **मुद्रास्फीति प्रबंधन:** ऊर्जा और कमोडिटी (वस्तुओं) की कीमतों के माध्यम से आयातित मुद्रास्फीति मौद्रिक नीति निर्णयों को जटिल बना सकती है।

#### वित्तीय क्षेत्र की चुनौतियाँ

- **शेयर बाज़ार की अस्थिरता:** लगातार एफपीआई (FPI) की निकासी से इक्विटी बाज़ारों में भारी उतार-चढ़ाव आ सकता है।
- **पूंजी की बढ़ती लागत:** उच्च वैश्विक प्रतिफल व्यवसायों और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए वित्तपोषण लागत बढ़ा सकते हैं।
- **बॉन्ड बाज़ार की प्रतिस्पर्धा:** भारतीय बॉन्ड को उच्च-प्रतिफल देने वाली और सुरक्षित विकसित-बाज़ार सरकारी प्रतिभूतियों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी होगी।

#### संरचनात्मक चुनौतियाँ

- **विदेशी पूंजी पर निर्भरता:** अस्थिर पोर्टफोलियो प्रवाह पर अत्यधिक निर्भरता कमज़ोरियाँ पैदा करती है।

#### आगे की राह

##### अल्पकालिक उपाय

- मुद्रा अस्थिरता के प्रबंधन के लिए आरबीआई (RBI) का हस्तक्षेप।
- एफपीआई (FPI) प्रवाह को आकर्षित करने के लिए लक्षित नीतिगत उपाय।

- सरकार और निगमों के लिए वित्तपोषण स्रोतों का विविधीकरण।
- बफर के रूप में विदेशी मुद्रा भंडार (forex reserves) को मजबूत करना।

### दीर्घकालिक रणनीति

- पीएलआई (PLI) और मेक इन इंडिया योजनाओं के माध्यम से विनिर्माण निर्यात को बढ़ावा देना।
- विदेशी पूंजी पर निर्भरता कम करने के लिए घरेलू बचत को सुदृढ़ (गहरा) करना।
- संरचनात्मक सुधारों के माध्यम से स्थिर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) को आकर्षित करना।
- विदेशी निवेशकों के लिए विकल्प प्रदान करने हेतु बॉन्ड बाजारों का विकास करना।
- श्रम, भूमि और पूंजी बाजार सुधारों के माध्यम से प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना।

### बाह्य अंतरिक्ष के लिए रणनीतिक प्रतिस्पर्धा (STRATEGIC CONTEST FOR OUTER SPACE)

#### संदर्भ

काउंटर-स्पेस हथियारों, उपग्रह कांस्टेलेशन (satellite constellations), चंद्र अन्वेषण और सैन्य-अंतरिक्ष एकीकरण में तीव्र प्रगति बाह्य अंतरिक्ष को भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के एक प्रमुख क्षेत्र में बदल रही है।

#### एक रणनीतिक शक्ति प्रदर्शन के रूप में अंतरिक्ष

- **सूचना और खुफिया जानकारी (इंटेलिजेंस) पर नियंत्रण:** उपग्रह रीयल-टाइम आईएसआर (ISR - Intelligence, Surveillance and Reconnaissance / खुफिया, निगरानी और टोही) प्रदान करते हैं, जिससे सेनाओं को दुश्मन की गतिविधियों को ट्रैक करने और अभियानों का समन्वय करने में मदद मिलती है।
  - उदाहरणार्थ, चीन पीएलए (PLA) की निगरानी का समर्थन करने वाले 400 से अधिक सैन्य उपग्रह संचालित करता है।
- **काउंटर-स्पेस हथियारों का विकास:** चीन विरोधी उपग्रहों को अक्षम या नष्ट करने की क्षमता का निर्माण कर रहा है।
  - उदाहरणार्थ, चीन के 2007 के ASAT परीक्षण ने एक मौसम उपग्रह को नष्ट कर दिया, जो कक्षा में उपग्रहों को भौतिक रूप से लक्षित करने की उसकी क्षमता को प्रदर्शित करता है।
- **मेगा सैटेलाइट कांस्टेलेशन के माध्यम से प्रतिस्पर्धा:** बड़े उपग्रह नेटवर्क संचार लचीलापन और रणनीतिक प्रभाव प्रदान करते हैं।
  - उदाहरणार्थ, स्पेसएक्स का स्टारलिनक विश्व स्तर पर हजारों उपग्रह संचालित करता है, जबकि चीन एक प्रतिद्वंद्वी नेटवर्क बनाने के लिए 2030 तक 36,000 से अधिक LEO उपग्रहों की योजना बना रहा है।
- **इलेक्ट्रॉनिक युद्ध क्षमताएं:** चीन ऐसे उपग्रह विकसित कर रहा है जो अन्य उपग्रहों के पास पहुंचने, उनका निरीक्षण करने या उनमें हस्तक्षेप करने में सक्षम हैं।
  - उदाहरणार्थ, 2022 में, एक चीनी अंतरिक्ष यान ने एक निष्क्रिय उपग्रह को ग्रेवयार्ड ऑर्बिट (graveyard orbit) में ले जाकर, उन्नत कक्षीय युद्धाभ्यास (orbital manoeuvring) क्षमता का प्रदर्शन किया।

- **लेज़र-आधारित अंतरिक्ष युद्ध:** चीन निर्देशित-ऊर्जा प्रणालियों में निवेश कर रहा है जो दुश्मन के उपग्रहों को नष्ट किए बिना अस्थायी रूप से अंधा (blinding) करने में सक्षम हैं।
- **चंद्र उपस्थिति के लिए होड़:** चीन चंद्रमा पर दीर्घकालिक रणनीतिक उपस्थिति चाहता है। (चीन 2036 तक एक मानवयुक्त चंद्र लैंडिंग की योजना बना रहा है और रूस के साथ अंतर्राष्ट्रीय चंद्र अनुसंधान स्टेशन (ILRS) विकसित कर रहा है।)
- **अंतरिक्ष संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा:** खगोलीय पिंडों से महत्वपूर्ण खनिजों और ऊर्जा संसाधनों के निष्कर्षण तक प्रतिस्पर्धा बढ़ सकती है। (उदाहरणार्थ, चीन चंद्र हीलियम-3 और क्षुद्रग्रह खनन की खोज कर रहा है।)
- **अंतरिक्ष-आधारित ऊर्जा अवसंरचना:** चीन का लक्ष्य सीधे अंतरिक्ष में सौर ऊर्जा का दोहन करना और पृथ्वी पर ऊर्जा वापस भेजना है। (उदाहरणार्थ, 2050 तक अंतरिक्ष-आधारित सौर ऊर्जा प्रणाली स्थापित करने का लक्ष्य।)
- **अंतरिक्ष क्षेत्र में सैन्य-नागरिक संलयन (फ्यूजन):** वाणिज्यिक अंतरिक्ष कंपनियों को चीन के रणनीतिक उद्देश्यों में एकीकृत किया गया है। (लैंडस्पेस, आईस्पेस और वनस्पेस जैसी कंपनियां चीन के राष्ट्रीय अंतरिक्ष पारिस्थितिकी तंत्र में योगदान करती हैं।)
- **अंतरिक्ष कूटनीति और वैश्विक प्रभाव:** प्रमुख शक्तियाँ रणनीतिक साझेदारी और प्रभाव स्थापित करने के लिए अंतरिक्ष सहयोग का उपयोग करती हैं। (उदाहरणार्थ, चीन की ILRS पहल अमेरिका के नेतृत्व वाले आर्टेमिस समझौते के विकल्प के रूप में उभर रही है।)

#### भारत के लिए निहितार्थ

- **बढ़ता क्षमता का अंतर:** चीन के पास उपग्रहों की संख्या और सैन्य-अंतरिक्ष परिसंपत्तियां काफी अधिक हैं। (भारत लगभग 60 उपग्रह संचालित करता है, जबकि अकेले चीन के पास 400 से अधिक सैन्य उपग्रह हैं।)
- **ISR क्षमताओं के लिए खतरा:** संघर्ष के दौरान भारत के निगरानी उपग्रह असुरक्षित हो सकते हैं। (CARTOSAT या RISAT उपग्रहों को लक्षित करने से एलएसी के साथ भारत की युद्धक्षेत्र खुफिया जानकारी (battlefield intelligence) कम हो सकती है।)
- **नेविगेशन (नौवहन) प्रणालियों के लिए जोखिम:** चीनी जैमिंग और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध क्षमताएं भारत की पोजिशनिंग सेवाओं को प्रभावित कर सकती हैं। (NavIC में हस्तक्षेप सैन्य अभियानों, विमानन और नेविगेशन को प्रभावित कर सकता है।)
- **गैर-गतिज (Non-Kinetic) हमलों के प्रति संवेदनशीलता:** उपग्रहों को अस्थायी रूप से अंधा करने से पूर्ण पैमाने पर संघर्ष (escalation) को ट्रिगर किए बिना खुफिया जानकारी में अंतराल आ सकता है। (लेज़र डैजलिंग उपग्रहों को सीमा के पास सैनिकों की आवाजाही की निगरानी करने से रोक सकता है।)
- **महत्वपूर्ण अवसंरचना पर प्रभाव:** उपग्रह व्यवधान बैंकिंग, संचार, आपदा प्रबंधन और परिवहन नेटवर्क को प्रभावित कर सकता है। (आधुनिक डिजिटल अर्थव्यवस्थाएं अंतरिक्ष-आधारित सेवाओं पर अत्यधिक निर्भर हैं।)
- **भारत के अंतरिक्ष उद्योग पर दबाव:** चीन का विस्तार करता वाणिज्यिक अंतरिक्ष क्षेत्र वैश्विक प्रतिस्पर्धा को तीव्र कर सकता है। (चीनी प्रक्षेपण कंपनियां वैश्विक वाणिज्यिक प्रदाताओं के साथ तेजी से प्रतिस्पर्धा कर रही हैं।)
- **चंद्र शासन (Lunar Governance) में रणनीतिक चुनौतियाँ:** चंद्रमा पर चीन की बढ़ती उपस्थिति चंद्र संसाधनों और बुनियादी ढांचे के संबंध में भविष्य के नियमों को प्रभावित कर सकती है।

## आगे की राह

- **उपग्रहों की संख्या बढ़ाना:** अतिरिक्त (redundancy) पैदा करने के लिए स्वदेशी उपग्रह निर्माण और प्रक्षेपण क्षमता का विस्तार करना। (बड़े कांस्टेलेशन व्यक्तिगत उपग्रह के नुकसान के प्रति संवेदनशीलता को कम करते हैं)
- **वितरित उपग्रह कांस्टेलेशन का विकास:** कुछ बड़े उपग्रहों से कई छोटे उपग्रह नेटवर्क की ओर स्थानांतरित होना। (विरोधियों के लिए संपूर्ण प्रणालियों को अक्षम करना अधिक कठिन होता है)
- **काउंटर-स्पेस क्षमताओं को मज़बूत करना:** मिशन शक्ति से परे विश्वसनीय निवारक (deterrence) का निर्माण करना। (इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, साइबर-अंतरिक्ष रक्षा और सह-कक्षीय (co-orbital) प्रौद्योगिकियां)
- **अंतरिक्ष स्थितिजन्य जागरूकता (Space Situational Awareness) बढ़ाना:** उपग्रहों, मलबे और शत्रुतापूर्ण कक्षीय गतिविधियों की निगरानी में सुधार करना। (प्रोजेक्ट नेत्रा और रक्षा अंतरिक्ष एजेंसी की पहल)
- **निजी क्षेत्र की भागीदारी को बढ़ावा देना:** भारत के वाणिज्यिक अंतरिक्ष पारिस्थितिकी तंत्र के विकास में तेजी लाना। (इन-स्पेस (IN-SPACE) सुधार, स्काईरूट, अग्निकुल और पिक्सेल)
- **रणनीतिक साझेदारी को मज़बूत करना:** डेटा साझा करने और अंतरिक्ष लचीलेपन के लिए अमेरिका, फ्रांस, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ सहयोग का विस्तार करना। (भागीदार उपग्रह नेटवर्क व्यवधानों के दौरान बैकअप प्रदान कर सकते हैं)
- **डीप-स्पेस मिशनों में तेजी लाना:** चंद्रयान, ल्यूपेक्स (LUPEX), गगनयान और भविष्य के चंद्र अन्वेषण कार्यक्रमों के माध्यम से गति बनाए रखना।

## एनएफएचएस-6 (NFHS-6): भारत का सार्वजनिक स्वास्थ्य परिवर्तन

### संदर्भ

एनएफएचएस-6 (NFHS-6), 2023-24 का छठा दौर भारत के स्वास्थ्य परिदृश्य की एक सूक्ष्म तस्वीर प्रस्तुत करता है। निष्कर्ष कुपोषण और संचारी रोगों (communicable diseases) के प्रभुत्व वाले स्वास्थ्य बोझ से हटकर पोषण संबंधी कमियों और गैर-संचारी रोगों (NCDs) के सह-अस्तित्व की विशेषता वाले बदलाव का संकेत देते हैं।

### प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य उपलब्धियां

- **संस्थागत प्रसव में सुधार:** स्वास्थ्य देखभाल संस्थानों में होने वाले जन्मों के अनुपात में और वृद्धि हुई है, जो चिकित्सा सुविधाओं तक अधिक पहुंच और सुरक्षित प्रसव प्रथाओं को दर्शाता है।
- **बेहतर प्रसवपूर्व देखभाल कवरेज:** उच्च पंजीकरण दर, पहली तिमाही में नामांकन में वृद्धि, और अनुशंसित प्रसवपूर्व जांच प्राप्त करने वाली अधिक महिलाओं के साथ मातृ स्वास्थ्य सेवाओं का उल्लेखनीय रूप से विस्तार हुआ है।
- **निरंतर निम्न प्रजनन स्तर:** भारत की कुल प्रजनन दर प्रतिस्थापन सीमा (replacement threshold) से नीचे बनी हुई है, जो महिला शिक्षा, प्रजनन स्वास्थ्य जागरूकता और परिवार नियोजन को अपनाने में प्रगति को दर्शाती है।
- **बाल कुपोषण में गिरावट:** स्टंटिंग (stunting) और गंभीर वेस्टिंग (severe wasting) जैसे संकेतकों में ध्यान देने योग्य सुधार दिखा है। उन्नत पोषण कार्यक्रमों, मातृ देखभाल पहलों और कल्याणकारी हस्तक्षेपों ने बच्चों में स्वस्थ शारीरिक और संज्ञानात्मक विकास में योगदान दिया है।

- **बचपन के टीकाकरण का विस्तार:** छोटे बच्चों में टीकाकरण कवरेज बढ़ा है, जिससे बीमारी की रोकथाम के प्रयासों को मजबूती मिली है और वैक्सीन-रोकथाम योग्य बीमारियों के प्रति संवेदनशीलता कम हुई है।
- **रोटावायरस टीकाकरण का व्यापक कवरेज:** रोटवायरस टीकाकरण में तेज वृद्धि डायरिया रोगों से निपटने में सार्वजनिक स्वास्थ्य आउटरीच कार्यक्रमों की सफलता को दर्शाती है, जो बाल रुग्णता (morbidity) और मृत्यु दर में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है।
- **सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं की मजबूत भूमिका:** बचपन के अधिकांश टीकाकरण निरंतर सरकारी स्वास्थ्य देखभाल संस्थानों के माध्यम से प्रशासित किए जा रहे हैं, जो निवारक स्वास्थ्य सेवाओं को प्रदान करने में सार्वजनिक प्रणालियों के महत्व को रेखांकित करता है।
- **उन्नत वित्तीय जोखिम सुरक्षा:** आयुष्मान भारत जैसी पहलों के समर्थन से स्वास्थ्य बीमा कवरेज का काफी विस्तार हुआ है। इससे स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच में सुधार हुआ है और चिकित्सा उपचार से जुड़े वित्तीय बोझ में कमी आई है।
- **लैंगिक डिजिटल अंतर में कमी:** महिलाओं के बीच इंटरनेट के उपयोग में काफी वृद्धि हुई है, जिससे स्वास्थ्य जानकारी, डिजिटल सेवाओं, वित्तीय अवसरों और सामाजिक भागीदारी तक पहुंच में सुधार हुआ है।

#### उभरती चिंताएँ और संरचनात्मक कमियाँ

- **कुपोषण का दोहरा बोझ:** भारत को कमजोर आबादी के बीच कुपोषण (अल्पपोषण) और बदलती जीवन शैली, खान-पान की आदतों और शहरीकरण से जुड़े बढ़ते मोटापे की एक साथ चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।
- **बढ़ता मोटापा और एनसीडी (NCD) जोखिम:** पुरुषों और महिलाओं दोनों में अधिक वजन और मोटापे का बढ़ता स्तर मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोगों और अन्य पुरानी बीमारियों में भविष्य में वृद्धि की ओर इशारा करता है।
- **स्तनपान में गिरावट:** स्तनपान दरों में कमी शिशु पोषण, प्रतिरक्षा और प्रारंभिक बचपन के विकास के संबंध में चिंता पैदा करती है।
- **सिजेरियन (Caesarean) प्रसव में वृद्धि:** सी-सेक्शन जन्मों के बढ़ते प्रसार ने अत्यधिक चिकित्सा हस्तक्षेप, अनावश्यक प्रक्रियाओं और मातृ स्वास्थ्य देखभाल प्रथाओं में असमानताओं के बारे में चिंताएं बढ़ा दी हैं।
- **एनसीडी वित्तपोषण पर सीमित ध्यान:** भारत का स्वास्थ्य सेवा व्यय बड़े पैमाने पर उपचार-उन्मुख बना हुआ है, जिसमें रोकथाम, जांच (स्क्रीनिंग) और पुरानी बीमारियों के दीर्घकालिक प्रबंधन में अपर्याप्त निवेश है।

#### व्यापक निहितार्थ

- **वृद्ध होते समाज (Ageing Society) की ओर संक्रमण:** घटती प्रजनन क्षमता और जीवन प्रत्याशा में सुधार धीरे-धीरे भारत के जनसांख्यिकीय प्रोफाइल को नया आकार दे रहे हैं। इसके लिए जराचिकित्सा देखभाल (geriatric care), पेंशन, स्वास्थ्य देखभाल अवसंरचना और सामाजिक सुरक्षा प्रणालियों में अधिक निवेश की आवश्यकता होगी।
- **एनसीडी का बोझ:** मोटापे और अस्वस्थ जीवन शैली में वृद्धि से पता चलता है कि पुरानी बीमारियां आने वाले दशकों में बीमारी और मृत्यु दर का प्रमुख स्रोत बन सकती हैं।
- **जनसांख्यिकीय लाभांश पर प्रभाव:** पुरानी स्वास्थ्य स्थितियों से प्रभावित कार्यबल कम उत्पादकता, बढ़ी हुई अनुपस्थिति और उच्च स्वास्थ्य देखभाल लागत का अनुभव कर सकता है, जो संभावित रूप से भारत की आर्थिक विकास की संभावनाओं को सीमित कर सकता है।

- **परिवारों पर बढ़ा हुआ वित्तीय तनाव:** बीमा कवरेज के विस्तार के बावजूद, जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों के लिए दीर्घकालिक उपचार की आवश्यकताएं विशेष रूप से कम आय वाले परिवारों पर महत्वपूर्ण वित्तीय दबाव डाल सकती हैं।
- **स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली के पुनर्भविन्यास की आवश्यकता:** यह सर्वेक्षण मातृ-शिशु और संचारी रोग के फोकस से आगे बढ़कर एक व्यापक जीवन-चक्र दृष्टिकोण की ओर बढ़ने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है, जो रोकथाम, जांच और पुरानी बीमारी के प्रबंधन को प्राथमिकता देता है।

### आगे की राह

- **निवारक स्वास्थ्य देखभाल को मजबूत करना:** प्रारंभिक निदान को सुविधाजनक बनाने और दीर्घकालिक उपचार लागतों को कम करने के लिए मधुमेह, उच्च रक्तचाप और हृदय संबंधी स्थितियों के लिए राष्ट्रव्यापी जांच (screening) को संस्थागत बनाया जाना चाहिए।
- **स्वस्थ व्यवहार प्रथाओं को बढ़ावा देना:** संतुलित आहार, नियमित शारीरिक गतिविधि और स्तनपान को प्रोत्साहित करने वाले सार्वजनिक अभियान मोटापे और जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों से निपटने में मदद कर सकते हैं।
- **पोषण में सुधार के लिए राजकोषीय उपायों का उपयोग:** शर्करा युक्त पेय और अति-प्रसंस्कृत (ultra-processed) खाद्य पदार्थों पर उच्च कर निवारक स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिए संसाधन उत्पन्न करते हुए अस्वस्थ खपत को हतोत्साहित कर सकते हैं।
- **स्वास्थ्य देखभाल निरंतरता (Healthcare Continuum) को मजबूत करना:** प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केंद्रों से लेकर तृतीयक अस्पतालों तक फैली एक मजबूत रेफरल और उपचार प्रणाली, प्रभावी एनसीडी प्रबंधन के लिए आवश्यक है।
- **मातृ और शिशु स्वास्थ्य लाभों का संरक्षण:** हाल की उपलब्धियों को बनाए रखने के लिए पोषण, टीकाकरण, प्रजनन स्वास्थ्य देखभाल और अंतिम-छोर (last-mile) सेवा वितरण में निरंतर निवेश आवश्यक है।
- **डेटा-संचालित नीति-निर्माण को बढ़ावा देना:** लक्षित हस्तक्षेपों और संसाधन आवंटन के लिए एनएफएचएस (NFHS) निष्कर्षों का लाभ उठाने से शासन, जवाबदेही और कार्यक्रम प्रभावशीलता में सुधार हो सकता है।